॥ ओ३म् ॥

भूमिका

सब सज्जन लोगों को विदित होवे कि मैंने बहुत सज्जनों के अनुरोध करने से श्रीयुत महाराजे विक्रमादित्य के संवत् १९३२ कार्त्तिक कृष्णपक्ष ३०, शनिवार के दिन 'संस्कारविधि' का प्रथमारम्भ किया था । उस में संस्कृतपाठ सब एकत्र और भाषापाठ एकत्र लिखा था। इस कारण संस्कार करनेवाले मनुष्यों को संस्कृत और भाषा दूर-दूर होने से कठिनता पड़ती थी । और जो १००० एक हजार पुस्तक छपे थे, उन में से अब तक एक भी नहीं रहा। इसलिये श्रीयुत महाराजे विक्रमादित्य के संवत् १९४० आषाढ बदि १३ रविवार के दिन पुनः संशोधन करके छपवाने के लिए विचार किया ।

अब की वार जिस-जिस संस्कार का उपदेशार्थ प्रमाण-वचन और प्रयोजन है, वह-वह संस्कार के पूर्व लिखा जायेगा । तत्पश्चात् जो-जो संस्कार में कर्त्तव्य विधि है, उस-उस को क्रम से लिखकर पुनः उस संस्कार का शेष विषय जो कि उस संस्कार से दूसरे संस्कार तक करना चाहिए, वह लिखा है । और **जो विषय प्रथम अधिक लिखा था, उस में से अत्यन्त उपयोगी न जानकर छोड़ भी दिया है और अब की वार जो-जो अत्यन्त उपयोगी विषय है, वह-वह अधिक भी लिखा है ।**

इस में यह न समझा जावे कि प्रथम विषय युक्त न था, और युक्त छूट गया था उस का संशोधन किया है, **किन्तु उन विषयों का यथावत् क्रमबद्ध संस्कृत के सूत्रों में प्रथम लेख किया था ।** उस में सब लोगों की बुद्धि कृतकारी नहीं होती थी, इसलिए अब सुगम कर दिया है । क्योंकि संस्कृतस्थ विषय विद्वान् लोग समझ सकते थे, साधारण नहीं ।

इस में सामान्य विषय, जो कि सब संस्कारों के आदि और उचित समय तथा स्थान में अवश्य करना चाहिए, वह प्रथम सामान्यप्रकरण में लिख दिया है । और जो मन्त्र वा क्रिया सामान्यप्रकरण की संस्कारों में अपेक्षित है, उस के पृष्ठ पंक्ति की प्रतीक उन कर्त्तव्य संस्कारों में लिखी है कि जिस को देखके सामान्यविधि की क्रिया वहां सुगमता

से कर सकें और सामान्यप्रकरण का विधि भी सामान्यप्रकरण में लिख दिया है, अर्थात् वहां का विधि करके कर्तव्य संस्कार का कर्त्तव्य कर्म करे । और जो सामान्यप्रकरण का विधि लिखा है, वह एक स्थान से अनेक स्थलों में अनेक वार करना होगा । जैसे अग्न्याधान प्रत्येक संस्कार में कर्त्तव्य है, वैसे वह सामान्यप्रकरण में एकत्र लिखने से सब संस्कारों में वारंवार न लिखना पड़ेगा ।

इस में प्रथम ईश्वर की स्तुति-प्रार्थना-उपासना, पुनः स्वस्तिवाचन, शान्तिपाठ तदनन्तर सामान्यप्रकरण, पश्चात् गर्भाधानादि अन्त्येष्टिपर्यन्त सोलह संस्कार क्रमशः लिखे हैं और यहां सब मन्त्रों का अर्थ नहीं लिखा है, क्योंकि इस में कर्मकाण्ड का विधान है । इसलिये विशेषकर क्रिया-विधान लिखा है । और जहां-जहां अर्थ करना आवश्यक है, वहां-वहां अर्थ भी कर दिया है । और मन्त्रों के यथार्थ अर्थ मेरे किये वेद-भाष्य में लिखे ही हैं, जो देखना चाहें वहां से देख लेवें । यहां तो केवल क्रिया करना ही मुख्य है । **जिन करके शरीर और आत्मा सुसंस्कृत होने से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त हो सकते हैं और सन्तान अत्यन्त योग्य होते हैं । इसलिये संस्कारों का करना सब मनुष्यों को अति उचित है ।**

॥ इति भूमिका ॥

–स्वामी दयानन्द सरस्वती